महाकवि कालिदास का समय

महाकवि कालिदास का समय संस्कृत-साहित्येतिहास का एक प्रत्यक्ष विवादास्पद विषय बना हुआ है। विद्वानों ने उक्त विषय के सम्बन्ध में जो मत व्यक्त किया है व एक दूसरे से पर्याप्त भिन्न है जिनके कारण अभी तक सर्वसम्मति से किसी भी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा जा सका है। उनके समय को निश्चित करने में इसलिए भी कठिनाई हो रही है कि एक ओर तो उन्होंने अपने बारे में अपनी रचनाओं में कुछ नहीं लिखा तथा दूसरी ओर इसके विपरीत उनके विषय में अनेक परस्पर भिन्न जनश्रुतियाँ प्रचलित हो गई है; जो उक्त विषय को और अधिक उलझा देती है। इसके अतिरिक्त कालिदास नाम के कई कवि प्रचलित हो गये थे। महाकवि राजशेखर (दसवीं शदी) के समय तक तीन कालिदास हो चुके थे, जिसकी पुष्टि उनके इस पद्य से होती है-

जीयते एकोऽपिहन्त कालिदासो न केनचित्।
श्रृंगारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु।। (सूक्तिमुक्तावली)

महाकवि राजशेखर के इन वर्णन से ऐसा जान पड़ता है कि उन्होंने जो 'एकोऽपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्' के द्वारा जिन एक कालिदास का गौरव गान किया है वे ही मुख्य रूप से रघुवंशकार कालिदास है तथा अन्य या तो कालिदास के परवर्ती हैं या उन्होंने उनकी उपाधि धारण कर ली।

छठी शतब्दी के महाराज हर्षवर्धन के दरबारी कवि बाणभट्ट ने अपने 'हर्षचरितम्' में कालिदास के काव्यों की काफी प्रशंसा की है। उन्होंने 'हर्षचरितम्' की प्रस्तावना में लिखा है-

निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसार्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते।। (हर्षचरितम् की प्रस्तावना)

दक्षिण भारत के एहोल नामक ग्राम से प्राप्त पुलकेशी द्वितीय के शिलालेख पर खुदी हुई प्रशस्ति में भी कालिदास की प्रशंसा की गई है-

येनायोजि नवेऽश्मस्थिरमर्थविधौ विवेकिना जिनवेश्म।
स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रित कालिदासभारविक्रीर्तिः।।

एहोल शिलालेख(पुलकेशी द्वितीय)

अतः कालिदास का समय ई० पूर्व प्रथम शताब्दी से लेकर छठी शताब्दी के

बीच माना जाना चाहिए। इस आधार पर उनके विषय में मुख्य रूप से तीन मत उपस्थित होते हैं–

1. छठी शताब्दी का मत
2. गुप्तकालीन मत
3. प्रथम शताब्दी ई॰ पूर्व का मत।

1. छठी शताब्दी का मत– इस मत के जन्मदाता जर्मन विद्वान मैक्समूलर हैं। उनके समर्थक डॉ॰ हार्नली तथा फर्गुसन महोदय का कथन है कि राजा यशोधर्मन ने बालादित्य नरसिंह गुप्त की सहायता से कोलर (कहलर) के युद्ध में हूणवंश के प्रतापी राजा मिहिरकुल को हराकर विक्रमादित्य की उपाधि धारण की और अपनी इस उपलब्धि के उपलक्ष्य में उन्होंने विक्रम नामक एक नया संवत् चलाया, जिसे प्राचीन एवं चिरस्मरणीय बनाने के लिए उसे 600 वर्ष पूर्व से चलाकर उसका आरंभ 57(57) ई॰ पूर्व में माना।

जबकि इसके प्रचलित होने का वास्तविक समय ई॰ 544 है। इस प्रकार विक्रमादित्य का समय 544 ई॰ के आस-पास है और विभिन्न विद्वानों के अनुसार कालिदास विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक थे। अतएव कालिदास का समय छठी शताब्दी माना जाना चाहिए। इस मत की पुष्टि में यह कहा जाता है कि कालिदास ने अपने काव्यों में हूणों के पराजय का वर्णन किया है यथा–

तत्र हूणवरोधानां भर्तृषु व्यक्तविक्रमम्।
कपोलपाटलादेशि बभूव रघुचेष्टितम्॥

हूणों ने 500 ई॰ में भारतवर्ष पर आक्रमण आरंभ किया था। अतः उसका (हूणों का) वर्णन करनेवाले कालिदास का समय उसके पश्चात् यानी छठी शताब्दी होना चाहिए।

समीक्षा– यशोधर्मन द्वारा 600 वर्ष पूर्व से ही विक्रम संवत् का चलाना इतिहास विरुद्ध है। इससे पहले भी 'मालव संवत्' के नाम से संवत् चला आ रहा था। विक्रमादित्य ने शकों के विजय के उपलक्ष्य में उसी का नाम 'विक्रम संवत्' रख दिया। 'रघुवंशम्' में हूणों अथवा अन्य जातियों का वर्णन विदेशी विजेताओं के रूप में नहीं आता। 473 ई॰ की मन्दसौर वाली वत्सभट्टि रचित प्रशस्ति में 'ऋतुसंहारम्' और 'मेघदूतम्' के कितने ही पद्यों की साफ झलक दिखाई पड़ती है। ऐसी दशा में कालिदास को छठी शताब्दी का मानना कहाँ तक उचित है। यह सिद्धान्त भारतीय जनश्रुति के भी विरुद्ध है। अतः आधुनिक युग में इस मत के समर्थक कोई नहीं हैं।

2. गुप्तकालीन मत– बहुत से विद्वानों ने सर्वत्र समृद्ध एवं शान्तिमय गुप्त नरेशों के स्वर्णयुग में कालिदास की सत्ता माना है। पूना के प्रो. के.पी. पाठक का मत है कि कालिदास गुप्त नरेशों के समकालीन थे, क्योंकि 'रघुवंशम्' के चतुर्थ सर्ग में वर्णित रघु के दिग्विजय से समुद्रगुप्त के दिग्विजय में काफी समानता है, किन्तु डॉ. स्मिथ, कीथ, मैकडानल, रा. कृ. भण्डारकर, पं. रामावतार शर्मा आदि बहुसंख्यक

विद्वान् मानते हैं कि कालिदास के आश्रयदाता गुप्तनरेशों में सबसे अधिक प्रभावशाली चन्द्रगुप्त द्वितीय थे। इनके राज्यकाल में हर तरफ शांति थी तथा भारतीय कलाकौशल की उन्नति चरमोत्कर्ष पर थी। कालिदास के ग्रन्थों के समान गम्भीर विचार के ग्रन्थ ऐसे ही शांतिमय समय में स्थिर चित्त से लिखे जा सकते हैं।

महाकवि कालिदास ने 'कुमारसंभवम्' नामक काव्य की रचना संभवतः चन्द्रगुप्त के पुत्र कुमारगुप्त को लक्ष्य में रखकर किया होगा। 'रघुवंशम्' महाकाव्य के इन्दुमती स्वयंवर वर्णन में, 'ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः'। (रघुवंशम 6/22) इस वर्णन में चन्द्र शब्द को यहाँ चन्द्रगुप्त का द्योतक माना गया है। 'मालविकाग्निमित्रम्' नामक नाटक वाकाटक के राजा रूद्रसेन द्वितीय और चन्द्रगुप्त की पुत्री प्रभावती गुप्ता के विवाहोत्सव पर लिखा गया होगा। इसमें जिस अश्वमेध यज्ञ का उल्लेख किया गया है उससे भी समुद्रगुप्त द्वारा किये गये अश्वमेध यज्ञ की ओर ही संकेत जान पड़ता है।

समीक्षा– यह संभव नहीं जान पड़ता कि चन्द्रगुप्त जैसे पराक्रमी नरेश ने स्वयं अपना संवत् न चलाकर अपने से पूर्व प्रचलित मालव संवत् को ही अपने नाम से चलाया हो। साथ ही यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय के पितामह चन्द्रगुप्त प्रथम ने स्वयं गुप्त संवत् प्रचारित किया था फिर क्यों चन्द्रगुप्त द्वितीय इस संवत् को अस्वीकार कर अपना अलग संवत् चलाते? चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा जारी किया गया तथाकथित विक्रम संवत् उनके बाद की शताब्दियों में कहीं उल्लिखित नहीं है। स्वयं चन्द्रगुप्त के पौत्र स्कन्दगुप्त के गिरिनार वाले शिलालेख में विक्रम संवत् का उल्लेख न होकर गुप्त संवत् का ही उल्लेख हुआ है 'गुप्तकाले गणनां विधाय' विक्रम संवत् का उल्लेख नवीं शताब्दी से पूर्व कहीं नहीं मिलता। अतः चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा नवीन संवत् चलाए जाने की घटना ऐतिहासिक तथ्यों से मेल नहीं खाती इसीलिए कालिदास को गुप्तकाल में मानना सर्वथा असंगत है।

3. प्रथम शताब्दी ई॰ पूर्व का मत– उपर्युक्त कल्पनाओं से असंतुष्ट होकर कुछ विद्वानों ने 68 ई॰ की 'गाथासप्तशती' के पद्यों में दानशील राजा विक्रमादित्य के स्पष्ट उल्लेख मिलने के आधार पर ईसा के पूर्व विक्रमादित्य की सत्ता प्रामाणिक रूप से मान लिया है। इनके शकारि होने में भी किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है क्योंकि ईसा से 150 वर्ष पूर्व भारत में आने वाले की जानकारी इतिहास में वर्णित है। अतः इन्हीं की सभा में कालिदास की सत्ता मानना युक्तियुक्त एवं प्रामाणिक प्रतीत होता है। इसीलिए बल्लालसेन ने अपने 'भोजप्रबंध' में विक्रम संवत् के प्रवर्त्तक उज्जयिनी के राजा शकारि वीर विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में कविवर कालिदास की भी गणना की है।

धन्वन्तरि क्षपणकोऽमर सिंहशङ्कुवेतालभट्ट घटखर्परकालिदासाः।
ख्यातो वराहमिहिरोनृपतेः सभायां रत्नानि वै वररूचिर्नव विक्रमस्य।।
(ज्योतिर्बिंदाभरण-22 /10)

कालिदास के काव्यों से भी राजा विक्रमादित्य के दरबार में रहने का संकेत

मिलता है। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक की प्रस्तावना में रस एवं भाव का चमत्कार दिखाने वाले कलाकारों के आश्रयदाता विक्रमादित्य के परिषद् में इस नाटक के अभिनय करने का संकेत है, आर्ये! अभिरूपभूयिष्ठा परिषदियम्। अद्य खलु कालिदास ग्रथितवस्तुनाऽभिज्ञानशाकुन्तलनामधेयेन नवेन नाटकेनोपस्थातव्यस्माभिः। तत् प्रतिपात्रमार्यो यत्नः। (अभिज्ञानशाकु०/1/ पृष्ठ-9)

इसी प्रकार 'विक्रमोर्वशीयम्' नाटक के नामकरण में ही विक्रम शब्द का प्रयोग आया है- चित्ररथः-(राजानं दृष्ट्वा सबहुमानम्)दिष्टया महेन्द्रोपकारपर्याप्तविक्रममहिम्ना वर्धते भवान्। (विक्रमोर्वशीयम् /1/पृष्ठ 29)

चित्ररथः-"अनुत्सेकः खलु विक्रमालङ्कारः।" इत्यादि वचनों से इस बात की पुष्टि होती है कि कालिदास का विक्रमादित्य के साथ अवश्य सम्बन्ध था।

'रामचंद्र' काव्य में तो स्पष्ट उल्लेख है कि शकारि वीर विक्रमादित्य में कालिदास की बड़ी ख्याति की थी "ख्याति कामपि कालिदासकवयोनीताः शकारातिना" अतः कालिदास राजा विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में एक महारत्न अवश्य थे।

भारतीय ज्योतिषगणना से भी इस बात की पुष्टि होती है कि ईसा से 57 वर्ष पूर्व विक्रमादित्य ने विक्रम संवत् का प्रचार किया था। विक्रमादित्य का प्रथम उल्लेख 'गाथासप्तशती' के निम्न श्लोक में उपलब्ध होता है-

संवाहण-सुहरस तोसिएण दन्ते णतुहकरे लक्खम्।
चलवेण विक्कमाइत्तचरिअं अणुसिक्खिअं तिस्सा।। (गाथा-5/64)

'गाथासप्तशती' के रचयिता सातवाहन राजा हाल प्रथम शताब्दी ईसवी में हुए थे। अतः कालिदास का समय भी ईसवी पूर्व प्रथम शताब्दी ही मानना चाहिए।

महाकवि की कृतियों में उपलब्ध कुछ अन्य उद्धरणों के आधार पर उनका समय- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में धीवर को चोरी के अपराध में जिस कठोर दण्ड का विधान किया गया है तथा उत्तराधिकार सम्बन्धी नियम जो प्राप्त होता है उससे भी स्पष्ट होता है कि उक्त रचना ईसा से पूर्व की है। क्योंकि उस समय मनु, वसिष्ठ एवं आपस्तम्ब ही धर्म के विषय में प्रमाण मान जाते थे तथा उनके द्वारा लिखित स्मृति ग्रन्थों के आधार पर ही न्याय किया जाता था। इनके अतिरिक्त महाकवि कालिदास ने 'रघुवंशम्' में राजा द्वारा जिस वर्णाश्रम-धर्म की व्यवस्था किये जाने का वर्णन किया है, वहाँ इन्होंने स्वयं भी मनु को उद्धृत करते हुए लिखा है कि मनु द्वारा प्रणीत राजाओं का धर्म वर्णों तथा आश्रमों की रक्षा करना है-

'नृपस्य वर्णाश्रम पालनं यत्य एव धर्मो मनुना प्रणीतः'। (रघु०14/67)

इससे यह प्रतीत होता है कि कालिदास के समय में मनु न्याय को ही अधिक प्रामाणिक माना जाता था। 'मनुस्मृति' आदि का समय ईसा से दो शताब्दी पूर्व स्वीकार किया गया है ऐसी स्थिति में महाकवि का समय भी प्रथम शताब्दी में ही सिद्ध होता है।

'मालविकाग्निमित्रम्' महाकवि का प्रथम नाटक है। इस नाटक के प्रारंभ में

उन्होंने अपने पूर्ववर्ती भास, सौमिल्ल एवं कविपुत्र नामक कवियों का उल्लेख किया है-

"प्रथितयशसां भास सौमिल्लकविपुत्रादीनां प्रबन्धानतिक्रम्य वर्तमानकवेः कालिदासस्य क्रियायां कथं बहुमानः।" (मालविकाग्निमित्रम् /1/पृष्ठ-4)

अर्थात् भास, सौमिल्ल और कविपुत्र जैसे बड़े-बड़े प्रसिद्ध कवियों के नाटकों को छोड़कर आप आजकल के नये कवि कालिदास के नाटक को इतना महत्त्व क्यों दे रहे हैं।

इस वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है कि कालिदास के समय लोगों के बीच भास आदि के नाटकों का अधिक सम्मान था तथा उनके नाटकों का अभिनय भी होता था। भास का समय इतिहासकारों ने 300 से 500 ई० पूर्व माना है। अतः इस आधार पर कालिदास का समय ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी मानना ही उचित प्रतीत होता है।